Exchange & Finance Available
Zelo Electric Scooter
Maa Bhagwati Services & Enterprises
B. No. 23, Infront of IDBI Bank,
Neemuch 9407423966, 8770664866

मालवा फर्स्ट

MALWA FIRST

स्वाभिमान ही हमारा अभिमान है

Periodicity- Weekly

PRGI Reg. No. MPHIN/2023/90883

संपादक : ऐश्वर्य शर्मा

नीमच, बुधवार

01 अप्रैल 2026

वर्ष - 03, अंक - 48 - मूल्य 02 रूपए

पृष्ठ - 04

E-mail: nmh.pawan@gmail.com

Contact: 9407423966, 8770664866

Commodity: Gold 1,51,905 Silver 2,95,000 Crude Oil 5,963 Natural Gas 302.20 Aluminium 232.30 Copper 827.35

एमपी में आज से 'स्कूल चलें हम' अभियान का शंखनाद

सीएम मोहन यादव करेंगे शुरुआत, 85 लाख बच्चों का होगा स्वागत

भोपाल। प्रदेश में नए शैक्षणिक सत्र वर्ष 2026-27 की शुरुआत बुधवार से "स्कूल चलें हम" अभियान के साथ होगी। स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा संचालित यह अभियान चार अप्रैल तक चलेगा। अभियान का राज्य स्तरीय कार्यक्रम टीटी नगर स्थित मॉडल हायर सेकेंडरी स्कूल में आयोजित किया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की उपस्थिति में सुबह 10 बजे इसकी औपचारिक शुरुआत होगी। जिला स्तर पर भी स्कूलों में प्रवेशोत्सव कार्यक्रम आयोजित होंगे, जिनमें जनप्रतिनिधि शामिल होंगे।

निःशुल्क पाठ्य-पुस्तकों का वितरण और नामांकन पर विशेष जोर - कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को निःशुल्क पाठ्य-पुस्तकों का वितरण किया जाएगा, ताकि सत्र की शुरुआत से ही पढ़ाई में किसी प्रकार की बाधा न आए। साथ ही अभिभावकों का स्वागत कर उन्हें विद्यालय से जोड़ा जाएगा। विभाग ने इस संबंध में सभी जिले के कलेक्टरों और जिला शिक्षा अधिकारियों को दिशा-निर्देश जारी कर दिए हैं। इस दौरान प्रदेश के सरकारी स्कूलों में नामांकन पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। इस अभियान के तहत ऐसे विद्यार्थियों को चिन्हित किया जाएगा, जो किन्हीं कारणों से पढ़ाई करने से वंचित रह गए हैं। बता दें कि प्रदेश में करीब 92 हजार सरकारी स्कूल संचालित हैं, जिनमें करीब 85 लाख विद्यार्थी अध्ययनरत हैं।

भविष्य से भेंट और अन्य गतिविधियां - अभियान के दूसरे दिन 'भविष्य से भेंट' कार्यक्रम आयोजित होगा, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के सफल व्यक्ति विद्यार्थियों से संवाद करेंगे और उन्हें प्रेरित करेंगे। तीसरे दिन विद्यालयों में सांस्कृतिक और खेल-कूद गतिविधियां आयोजित की जाएंगी। इस दौरान अभिभावकों को शिक्षा विभाग की योजनाओं की जानकारी दी जाएगी और 85 प्रतिशत से अधिक उपस्थिति वाले विद्यार्थियों के अभिभावकों को सम्मानित किया जाएगा।

असफल विद्यार्थियों पर विशेष फोकस - अभियान के अंतिम दिन "हार के आगे जीत" पहल के तहत उन विद्यार्थियों को चिन्हित किया जाएगा, जो कक्षोन्नति में असफल रहे हैं। अभिभावकों को बच्चों को पढ़ाई जारी रखने के लिए प्रेरित किया जाएगा। साथ ही शाला प्रबंधन समितियों की बैठक आयोजित कर शत-प्रतिशत नामांकन और नई कार्ययोजना पर चर्चा की जाएगी।

ग्रीष्मकालीन छुट्टियों में यात्रियों को बड़ी राहत

बांद्रा टर्मिनस-गोरखपुर स्पेशल ट्रेन की सेवाएं पुनः बहाल

रतलाम। आगामी ग्रीष्मकालीन छुट्टियों के दौरान यात्रियों की भारी भीड़ और यात्रा की बढ़ती मांग को देखते हुए पश्चिम रेलवे ने एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। यात्रियों की सुविधा के लिए बांद्रा टर्मिनस और गोरखपुर के बीच चलने वाली विशेष ट्रेन की सेवाओं को तत्काल प्रभाव से बहाल कर दिया गया है। इस निर्णय से उत्तर भारत की ओर यात्रा करने वाले यात्रियों, विशेषकर रतलाम मंडल के अंतर्गत आने वाले स्टेशनों के यात्रियों को बड़ी राहत मिलेगी।

पश्चिम रेलवे रतलाम मंडल के जनसंपर्क अधिकारी श्री मुकेश कुमार ने इस संबंध में विस्तृत जानकारी साझा करते हुए बताया कि गाड़ी संख्या 05053 गोरखपुर-बांद्रा टर्मिनस स्पेशल का संचालन 03 अप्रैल, 2026 से पुनः प्रारंभ किया जा रहा है। इसी क्रम में, वापसी दिशा में गाड़ी संख्या 05054 बांद्रा टर्मिनस-गोरखपुर स्पेशल की सेवाएं 04 अप्रैल, 2026 से शुरू होंगी। यह ट्रेन ग्रीष्मकाल के दौरान यात्रियों के दबाव को कम करने और आरामदायक सफर सुनिश्चित करने में सहायक सिद्ध होगी।

रेलवे प्रशासन ने यात्रियों से आग्रह किया है कि वे इन विशेष ट्रेनों के आगमन, प्रस्थान, ठहराव और कोच संरचना के संबंध में विस्तृत विवरण के लिए आधिकारिक वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in का उपयोग करें। इसके अतिरिक्त, यात्री 'रेलवन' ऐप के माध्यम से भी वास्तविक समय की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। पश्चिम रेलवे के इस कदम से छुट्टियों के दौरान घर जाने वाले लोगों और पर्यटकों को कन्फर्म टिकट प्राप्त करने में आसानी होगी।

न्याय की निष्पक्षता को प्रभावित कर सकता है AI

नई दिल्ली। भारतीय न्याय व्यवस्था में डिजिटल क्रांति की अगली लहर के रूप में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का प्रवेश हो चुका है। अदालती कार्यवाही के अनुवाद से लेकर सुप्रीम कोर्ट के फैसलों के भारतीय भाषाओं में अनुवाद तक में एआई का उपयोग हो रहा है जिसे एक बड़ी उपलब्धि के रूप में देखा जा रहा है।

लेकिन, इस तकनीकी छलांग के साथ गंभीर चिंताएं भी उभरी है। बिना किसी ठोस कानूनी ढांचे और पारदर्शिता के एआइ का हो रहा यह 'शैडो' उपयोग न्यायिक गरिमा और जनता के विश्वास के लिए खतरा बन सकता है।

एआई के बढ़ते उपयोग पर आई रिपोर्ट - भारतीय अदालतों में एआई के उपयोग पर जारी एक ताजा रिपोर्ट इसके प्रति सचेत करती है। रिपोर्ट कहती है कि अदालतों में एआई के प्रभावी इस्तेमाल के लिए इसे एक संस्थागत ढांचा देना होगा। रिपोर्ट में पांच सुरक्षा कवच और संस्थागत मजबूती की बात की गई है ताकि सही ढंग से एआई का उपयोग न्याय की शुचिता और जनता के विश्वास को मजबूती दे। कानूनी मामलों में शोध और अध्ययन करने वाले थिंक टैंक दक्ष ने डीएसएल के साथ मिल कर अदालत में एआई के बढ़ते उपयोग पर अभी हाल में एक रिपोर्ट 'एआई फॉर जस्टिस, एथिकल, फेयर एंड रोबोस्ट एडॉप्शन इन इंडियाज कोर्ट्स' जारी की है। यह रिपोर्टों कहती है कि भारत में ई-कोर्ट मिशन के तहत एआइ का उपयोग फिलहाल प्रायोगिक स्तर पर है, लेकिन इसमें उत्तरदायित्व और डेटा सुरक्षा को सवाल खड़े हो रहे हैं।

बाबा विश्वनाथ की शरण में सीएम मोहन यादव

एमपी-यूपी के बीच 'करार', बोले- मिलकर रचेंगे इतिहास

भोपाल । मध्य प्रदेश और उत्तरप्रदेश दोनों राज्य अब अपनी साझा और अलग कहानी बना रहे हैं। दोनों अपनी साझा विरासत को साथ लेकर आगे बढ़ रहे हैं। सीएम ने कहा अब वो जमाना गया, जब दो राज्य आपस में जल के बंटवारे के लिए ही लड़ते थे। मुझे गर्व है कि पीएम मोदी के नेतृत्व में हम कई रिकॉर्ड बना रहे हैं। ऐसे ही एक रिकॉर्ड हमारे केन-बेतवा लिंक

नदी परियोजना का है। जिससे पूरे बुंदेलखंड की तस्वीर बदलेगी। वो कांग्रेस के लोग थे जो ख्वाब दिखाते थे, लेकिन उनके सपने सपने ही रह गए। जब से पीएम मोदी के नेतृत्व वाली सरकार बनी है देश ने नये आयाम बनाए हैं, असंभव से असंभव काम को करके दिखाया है।'

ये शब्द एमपी सीएम मोहन यादव ने कहे। वे काशी/वाराणसी में आयोजित एमपी यूपी सहयोग सम्मेलन में बोल रहे थे। सीएम मोहन यादव ने यहां दोनों राज्यों के बीच हुई नई शुरुआत पर खुशी जाहिर करते हुए कहा कि अब दोनों राज्यों को मिलकर एक नया इतिहास रचेंगे, विकास की एक नई इबारत लिखेंगे।

उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश का संबंध भगवान राम और कृष्ण काल से है - सीएम मोहन यादव ने इस अवसर पर कहा कि पहले बाबा विश्वनाथ धाम बना। फिर महाकाल लोक। उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश का संबंध तो भगवान राम और कृष्ण के काल से गहरा है। भगवान राम जब वन गमन के लिए गए तो चित्रकूट में 11 साल का समय गुजारा। जब भगनवान कृष्ण ने कंस का वध किया तो वह उज्जैन के सांदीपनी ऋषि के आश्रम पहुंचे। जहां 14 विद्या, 18 पुराण, 4 वेद और 64 कला का अध्ययन किया।

उप मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा की उपस्थिति में 'जहरमुक्त खेती महाकुंभ' का भव्य समापन

जावद । नीमच जिले के जावद में आयोजित ऐतिहासिक 'जहरमुक्त-जीरो बजट कृषि प्रशिक्षण शिविर' का मंगलवार को गरिमामय वातावरण में भव्य समापन हुआ। कृषि उपज मंडी प्रांगण में आयोजित इस राष्ट्रीय स्तर के प्रशिक्षण महाकुंभ के समापन समारोह में मध्य प्रदेश के उप मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। इस अवसर पर क्षेत्र के अन्नदाताओं में भारी उत्साह देखा गया और आयोजन समिति द्वारा उप मुख्यमंत्री का आत्मीय स्वागत व अभिनंदन किया गया। पूर्व मंत्री एवं क्षेत्रीय विधायक ओमप्रकाश सखलेचा की अनूठी पहल पर आयोजित इस पांच दिवसीय शिविर ने आधुनिक खेती की दिशा में एक मील का पत्थर स्थापित किया है। समापन समारोह को संबोधित करते हुए उप मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा ने उपस्थित किसानों का मार्गदर्शन किया और उन्हें रासायनिक खादों के चक्रव्यूह से निकलकर प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि इस तरह के प्रशिक्षण से न केवल किसानों की लागत शून्य होगी, बल्कि समाज को जहरमुक्त शुद्ध आहार भी प्राप्त होगा। उप मुख्यमंत्री के प्रेरणादायी उद्बोधन ने शिविर में आए सैकड़ों किसानों में नई ऊर्जा का संचार किया।

उल्लेखनीय है कि इस शिविर के दौरान 'कृषि ऋषि' पद्मश्री डॉ. सुभाष पालेकर द्वारा किसानों को केवल एक देसी गाय के माध्यम से 15 एकड़ भूमि पर 'शून्य लागत' वाली खेती करने के अचूक गुर सिखाए गए। विधायक ओमप्रकाश सखलेचा के कुशल मार्गदर्शन में आयोजित इस भव्य कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए कार्यकर्ताओं और आयोजन समिति ने व्यापक तैयारियां की थीं। समापन अवसर पर जावद अंचल सहित दूर-दराज से आए बड़ी संख्या में किसानों ने शिरकत कर प्राकृतिक कृषि के इस महायज्ञ में सहभागिता की और आत्मनिर्भर खेती का संकल्प लिया।

क्रिएटिव माइंड्स ग्लोबल स्कूल द्वारा किया जा रहा है श्री प्रतापदासजी मदनानी स्कॉलरशिप स्कीम 2026 का आयोजन

मेधावी छात्रों को निःशुल्क शिक्षा का सुनहरा अवसर

नीमच। शहर के प्रतिष्ठित सीबीएसई एकल क्रिएटिव माइंड्स ग्लोबल स्कूल के डायरेक्टर विकास मदनानी के पूज्य पिताजी एवं स्कूल संचालन समिति 'जी जी मेमोरियल एजुकेशन एण्ड सोशल वेलफेयर सीसाइटी' के पूर्व सचिव श्री प्रतापदासजी मदनानी की स्मृति में उनके पुत्र एवं स्कूल डायरेक्टर विकास मदनानी ने 'श्री प्रतापदासजी मदनानी स्कॉलरशिप स्कीम वर्ष 2024 से शुरू करने का निर्णय लिया था। श्री प्रतापदासजी मदनानी क्रिएटिव माइंड्स ग्लोबल स्कूल की प्रगति के आधार स्तंभ एवं पथ प्रदर्शक थे। इस स्कॉलरशिप स्कीम के अंतर्गत चुनिंदा विद्यार्थियों को कक्षा 9वीं से 12वीं तक निःशुल्क शिक्षा प्रदान करने की शुरुआत की गई थी। गत वर्ष की तरह इस वर्ष भी श्री प्रतापदासजी मदनानी स्कॉलरशिप स्कीम की प्रवेश परीक्षा का आयोजन 31 मार्च को किया जा रहा है। इस स्कॉलरशिप स्कीम के अंतर्गत निम्न / मध्यम वर्ग परिवार के कुछ मेधावी विहरार्थियों का चयन कक्षा 9वीं एवं 11वीं में टेस्ट के माध्यम से किया जाएगा। चयनित विद्यार्थियों को क्रिएटिव माइंड्स ग्लोबल स्कूल में पूर्णतः निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाएगी। इस स्कॉलरशिप स्कीम के टेस्ट में भाग लेने वाले विद्यार्थियों के अभिभावकों की कल पारिवारिक वार्षिक आय 300000 से अधिक नहीं होना चाहिए। टेस्ट में भाग लेने हेतु कक्षा 9वीं में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के कक्षा 6ठी एवं 7वीं में न्यूनतम 85% अंक होना अनिवार्य है। कक्षा 11 वीं में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के कक्षा 8वीं एवं 9वीं में न्यूनतम 85% अंक होना अनिवार्य है।

स्कॉलरशिप टेस्ट का आयोजन क्रिएटिव माइंड्स ग्लोबल स्कूल के मेन कैंपस पर दिनांक 31 मार्च को किया जाएगा। इस टेस्ट में गणित विज्ञान अंग्रेजी विषय पर प्रश्न पूछे जाएंगे। कक्षा 9वीं में स्कॉलरशिप स्कीम में टॉप 3 बचों को चयनित किया जाएगा एवं कक्षा 11वीं में टॉप 2 बचों को चयनित किया जाएगा। इन पांचों चयनित विद्यार्थियों को क्रिएटिव माइंड्स ग्लोबल स्कूल में 12वीं क्लास तक निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाएगी। अधिक जानकारी के लिए मोबाइल नंबर 9893314243 पर संपर्क किया जा सकता है। टेस्ट में भाग लेने हेतु ऑनलाइन आवेदन करने के लिए या तो नीचे दी गई लिक पर जाए या नीचे दिए गए QR कोड को स्कैन करें।

https://spri.me/CMGS20

क्यूआर कोड को स्कैन करें।

हर महीने 31 जीबी डेटा इस्तेमाल कर रहा एक भारतीय

दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा यूजर बेस भारत के पास

नई दिल्ली। भारत में प्रति यूजर औसत मासिक मोबाइल डेटा की खपत वर्ष 2025 में 31 जीबी के आंकड़े को पार कर गई है जबकि वर्ष 2024 में यह खपत 27.5 जीबी थी। दूरसंचार उपकरण बनाने वाली कंपनी नोकिया के वार्षिक मोबाइल ब्राडबैंड सूचकांक (एमबीइटी) के 13वें संस्करण में कहा गया है कि वर्ष 2025 में अखिल भारतीय स्तर पर 5जी नेटवर्क पर डेटा का कुल मासिक उपयोग एक साल पहले की तुलना में 70 प्रतिशत बढ़कर 12.9 एक्साबाइट (ईबी) तक पहुंच गया है। साथ ही, देश के कुल मोबाइल ब्राडबैंड ट्रैफिक में 5जी की हिस्सेदारी अब लगभग 47 प्रतिशत हो गई है। रिपोर्ट के मुताबिक, प्रति यूजर औसत मासिक मोबाइल डेटा खपत में हुई यह वृद्धि पिछले पांच वर्षों में 18 प्रतिशत की वार्षिक औसत वृद्धि दर को दर्शाती है। यह बढ़ोत्तरी उन्नत मोबाइल ब्राडबैंड के तीव्र विस्तार और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) आधारित एप्लिकेशन, उच्च गुणवत्ता वाले 4K वीडियो देखने और क्लाउड गेमिंग जैसी अधिक डेटा खपत वाली सेवाओं की बढ़ती मांग का परिणाम है। भारत में कुल डेटा उपयोग वर्ष 2025 में 27 एक्साबाइट प्रति माह को पार कर गया है। एक एक्साबाइट का मतलब एक अरब जीबी से थोड़ा अधिक होता है। रिपोर्ट के मुताबिक, भारत अब दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा 5जी यूजर आधार वाला देश बन गया है।

साप्ताहिक मालवा फर्स्ट नीमच के बारे में घोषणा

फार्म 4 FORM IV

(नियम 8 देखिए)

1. प्रकाशन स्थान	-	नीमच (म.प्र.)
2. प्रकाशन अवधि	-	साप्ताहिक
3. मुद्रक का नाम	-	ऐश्वर्य शर्मा
(क्या भारत का नागरिक है ?)	-	हाँ
पता	-	बं.नं.23, IDBI बैंक के सामने, नीमच
4. प्रकाशक का नाम	-	ऐश्वर्य शर्मा
(क्या भारत का नागरिक है?)	-	हाँ
पता	-	बं.नं.23, IDBI बैंक के सामने, नीमच
5. सम्पादक का नाम	-	ऐश्वर्य शर्मा
(क्या भारत का नागरिक है?)	-	हाँ
पता	-	बं.नं.23, IDBI बैंक के सामने, नीमच
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा समस्त पूंजी के एक प्रतिशत अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हो ।	-	ऐश्वर्य शर्मा बं.नं.23, IDBI बैंक के सामने, नीमच

मैं ऐश्वर्य शर्मा एतद द्वारा घोषणा करता हुँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य है ।

दिनांक 01 अप्रैल 2026

प्रकाशक के हस्ताक्षर

ऐश्वर्य शर्मा

4 साल बाद एल्डरमैन नियुक्ति : नीमच जिले में 1 साल के लिए बने मनोनित पार्षद, चुनाव से पहले बड़ा फैसला

नीमच 29 मार्च (निप्र)। मध्यप्रदेश शासन नगरीय विकास एवं आवास विभाग ने प्रदेशभर की 123 नगर परिषदों में एल्डरमैन (मनोनीत पार्षद) नियुक्त करने का निर्णय लिया है। इसी क्रम में नीमच जिले की नगर पालिका परिषद और 11 नगर परिषदों में भी एल्डरमैन नियुक्त किए गए हैं। खास बात यह है कि यह नियुक्तियां नगर परिषदों के चुनाव के करीब 4 साल बाद की गई हैं, जबकि अब लगभग 1 साल बाद फिर से नगर निकाय चुनाव प्रस्तावित हैं ।

यह नियुक्तियां मध्यप्रदेश नगर पालिका अधिनियम 1961 की धारा 19 (1) (ग) के तहत की गई हैं। नियमानुसार इन एल्डरमैन का कार्यकाल वर्तमान परिषद के कार्यकाल तक ही रहेगा, यानी आगामी नगर निकाय चुनाव के साथ ही इनका कार्यकाल भी समाप्त हो जाएगा। ऐसे में ये नियुक्तियां केवल करीब एक वर्ष के लिए प्रभावी मानी जा रही हैं।

नगर पालिका परिषद नीमच में शांतिलाल गुप्ता, मनीषसिंह बैस, लता हरित, अरुणा तलरेजा, शंकर बंसल और हरभजन सलूजा को एल्डरमैन बनाया गया है। वहीं नगर परिषद रतनगढ़ में सत्यनारायण नागदा, जीवनलाल चारण, आशीष छीपा और रोशन बंजारा को जिम्मेदारी सौंपी गई है। नगर परिषद डीकेन में मुकेश बैरागी, तुलसीराम धाकड़, मदन राठौर और जगदीश मुंदड़ा को नियुक्त किया गया है । नगर परिषद सिंगोली में देवीलाल जंगम, शोभाकिशोर व्यास, महेश दाधीच और शिवकांत शर्मा, अठाना में लोकेंद्र सिंह चुण्डावत, जुगलकिशोर कारपेंटर, निलम बैरागी और राजाराम नरवाडिया, जीरन में हरिशंकर शर्मा, चांदीबाई, रितुराजसिंह और तुलसीराम अहीरवार को मनोनीत किया गया है।

नगर परिषद मनासा में अनिल राठौर, वन्दना व्यास, बाबू विजयवर्गीय और विकास कछावा, कुकड़ेश्वर में तुलसीराम मालवीय, विनोद मोदी, मीना कोचर और लोकेश तुगनावत, रामपुरा में राजेश मांडलिया, केसरबाई भोई, शिवम धनगर और गोविन्द सोनी को एल्डरमैन बनाया गया है । नगर परिषद जावद में रोजश सोनी, अनिल वीरवाल, शौकिन अन्नाण और आयुष गोयल, सरवानिया महाराज में कैलाश मालू, शिवराजसिंह राणावत, रमेशचन्द्र पाल और निर्मला बैरागी तथा नया गांव में अभय जैन, विजय गायरी, शक्तिसिंह और शंकरलाल मीणा को जिम्मेदारी दी गई है।

4 साल बाद नियुक्ति, अब सिर्फ 1 साल का कार्यकाल - स्थानीय स्तर पर इस निर्णय को लेकर चर्चा तेज हो गई है। क्योंकि नगर परिषदों के गठन के करीब 4 साल बाद एल्डरमैन नियुक्त किए गए हैं, जबकि अब महज एक साल बाद नए चुनाव होने हैं। ऐसे में इन मनोनीत पार्षदों का कार्यकाल सीमित रह जाएगा और यह नियुक्ति अल्पकालिक साबित हो सकती है।

प्रशासनिक मजबूती या चुनावी रणनीति? - विशेषज्ञ इसे स्थानीय प्रशासन को मजबूती देने का कदम मान रहे हैं, वहीं राजनीतिक जानकार इसे आगामी नगर निकाय चुनावों से पहले संगठनात्मक और राजनीतिक संतुलन साधने की रणनीति भी बता रहे हैं। फिलहाल, यह नियुक्तियां जिले की नगर परिषदों में आने वाले एक वर्ष के भीतर होने वाले कार्यों और निर्णयों पर असर डाल सकती हैं ।

Email: nmh.pawan@gmail.com
Contact: 9407423966, 8770664886

बीमा सुरक्षा का माध्यम बने, न कि मुनाफे का जाल

ललित गर्ग

विभिन्न रिपोर्टों के अनुसार, हजारों करोड़ रुपये के बीमा दावे हर वर्ष खारिज कर दिए जाते हैं। यह स्थिति न केवल चिंताजनक है, बल्कि बीमा प्रणाली की विश्वसनीयता पर भी प्रश्नचिह्न लगाती है। अक्सर देखा गया है कि पॉलिसी लेते समय ग्राहकों को शर्तों की पूरी जानकारी नहीं दी जाती। जटिल भाषा में लिखे गए नियम और शर्तें आम व्यक्ति की समझ से बाहर होती हैं। परिणामस्वरूप, जब दावा प्रस्तुत किया जाता है, तो उन्हीं शर्तों को आधार बनाकर भुगतान रोक दिया जाता है। इस समस्या का एक महत्वपूर्ण पहलू निजी अस्पतालों और बीमा कंपनियों के बीच संभावित गठजोड़ भी है।

बीमा का मूल उद्देश्य जीवन की अनिश्चितताओं से सुरक्षा प्रदान करना है। यह व्यवस्था व्यक्ति को बीमारी, दुर्घटना या अन्य संकटों के समय आर्थिक सहारा देती है। परंतु आज के दौर में यह व्यवस्था अपने मूल उद्देश्य से भटकती हुई दिखाई दे रही है। विशेषकर स्वास्थ्य बीमा के क्षेत्र में जो जटिलताएं, अपारदर्शिता और मनमानी देखने को मिल रही है, उसने आमजन के विश्वास को गहरी चोट पहुंचाई है। बीमा, जो सुरक्षा का माध्यम होना चाहिए था, वह कई बार शोषण का उपकरण बनता जा रहा है। वर्तमान समय में चिकित्सा सेवाओं की लागत अत्यधिक बढ़ चुकी है। निजी अस्पतालों में इलाज का खर्च लाखों में पहुंच जाता है। सरकार के द्वारा रियायती मूल्यों पर उपलब्ध कराई भूमि पर बने अस्पताल आज गरीबों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। ऐसे में स्वास्थ्य बीमा एक आवश्यक सुरक्षा कवच के रूप में उभरता है। बीमा कंपनियां भी इसी भय और भविष्य की अनिश्चितता का उपयोग कर लोगों को पॉलिसी खरीदने के लिए प्रेरित करती हैं। लेकिन वास्तविक समस्या तब सामने आती है जब बीमा धारक को उसकी जरूरत होती है। दावों के निपटान के समय कंपनियां अनेक तकनीकी कारणों, शर्तों और अपवादों का हवाला देकर भुगतान से बचने का प्रयास करती हैं।

विभिन्न रिपोर्टों के अनुसार, हजारों करोड़ रुपये के बीमा दावे हर वर्ष खारिज कर दिए जाते हैं। यह स्थिति न केवल चिंताजनक है, बल्कि बीमा प्रणाली की विश्वसनीयता पर भी प्रश्नचिह्न लगाती है। अक्सर देखा गया है कि पॉलिसी लेते समय ग्राहकों को शर्तों की पूरी जानकारी नहीं दी जाती। जटिल भाषा में लिखे गए नियम और शर्तें आम व्यक्ति की समझ से बाहर होती हैं। परिणामस्वरूप, जब दावा प्रस्तुत किया जाता है, तो उन्हीं शर्तों को आधार बनाकर भुगतान रोक दिया जाता है। इस समस्या का एक महत्वपूर्ण पहलू निजी अस्पतालों और बीमा कंपनियों के बीच संभावित गठजोड़ भी है। कई मामलों में अस्पताल अत्यधिक बिलिंग करते हैं और बीमा कंपनियां कम भुगतान करती हैं, जिससे मरीज को भारी आर्थिक बोझ उठाना पड़ता है। यह स्थिति विशेष रूप से मध्यम और निम्न वर्ग के लोगों के लिए अत्यंत पीड़ादायक होती है। कई बार तो ऐसी घटनाएं भी सामने आती हैं, जहां अस्पताल बकाया राशि के कारण मरीज के शव को तक रोक लेते हैं, जो मानवीय संवेदनाओं के विरुद्ध है।

यदि हम विकसित देशों की तुलना करें, तो वहां बीमा प्रणाली अधिक पारदर्शी और उत्तरदायी है। दावों का निपटान समयबद्ध और न्यायसंगत तरीके से किया जाता है। भारत में भी भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (आईआरडीएआई) जैसे नियामक संस्थान मौजूद हैं, जिनका उद्देश्य बीमा क्षेत्र को नियंत्रित और संतुलित करना है।

लेकिन व्यावहारिक स्तर पर इनकी प्रभावशीलता पर प्रश्न उठते रहे हैं। नियामक तंत्र की निष्क्रियता या सीमित हस्तक्षेप के कारण बीमा कंपनियों की मनमानी पर अंकुश नहीं लग पा रहा है। इस स्थिति में सुधार के लिए सबसे पहले बीमा प्रक्रिया को सरल और पारदर्शी बनाना आवश्यक है। पॉलिसी दस्तावेजों को आम भाषा में प्रस्तुत किया जाना चाहिए ताकि एक सामान्य व्यक्ति भी उसकी शर्तों को समझ सके। इसके साथ ही, बीमा एजेंटों की जिम्मेदारी तय की जानी चाहिए कि वे ग्राहकों को पूरी और सही जानकारी दें। गलत जानकारी देकर पॉलिसी बेचने पर कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए।

दूसरा महत्वपूर्ण कदम है-दावा निपटान प्रक्रिया का सरलीकरण। बीमा दावों के लिए एक मानकीकृत और समयबद्ध प्रक्रिया लागू की जानी चाहिए। यदि कोई दावा खारिज किया जाता है, तो उसके स्पष्ट और उचित कारण बताए जाएं। इसके लिए एक स्वतंत्र अपीलीय तंत्र भी होना चाहिए, जहां उपभोक्ता अपनी शिकायत दर्ज कर सके और उसे त्वरित न्याय मिल सके। तीसरा, अस्पतालों और बीमा कंपनियों के बीच पारदर्शिता सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक है। उपचार की लागत को नियंत्रित करने के लिए एक मानक दर प्रणाली लागू की जा सकती है। इससे अनावश्यक बिलिंग और वित्तीय शोषण पर रोक लगेगी। साथ ही, कैशलेस उपचार की सुविधा को अधिक प्रभावी और व्यापक बनाया जाना चाहिए ताकि मरीज को तत्काल आर्थिक राहत मिल सके। चौथा, सरकार को इस क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभानी होगी। एक राष्ट्रीय स्तर की निगरानी प्रणाली स्थापित की जानी चाहिए, जो बीमा कंपनियों और अस्पतालों की गतिविधियों पर नजर रखे। समय-समय पर ऑडिट और जांच के माध्यम से अनियमितताओं को उजागर किया जाए और दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए। पांचवां, बीमा साक्षरता को बढ़ावा देना अत्यंत आवश्यक है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में जागरूकता अभियान चलाकर लोगों को बीमा की शर्तों, अधिकारों और प्रक्रियाओं के बारे में जानकारी दी जानी चाहिए। विशेष रूप से गरीब और अशिक्षित वर्ग के लिए सरल मार्गदर्शिका और सहायता केंद्र स्थापित किए जाने चाहिए। निश्चित तौर पर बीमा व्यवसाय को केवल लाभ कमाने का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक सुरक्षा के एक महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में देखा जाना चाहिए। जब तक इस क्षेत्र में नैतिकता, पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित नहीं होगी, तब तक आमजन का विश्वास बहाल नहीं हो सकता। आज आवश्यकता इस बात की है कि बीमा प्रणाली को पुनर्गठित कर उसे जनहितकारी बनाया जाए। सरल प्रक्रियाएं, स्पष्ट नियम, सशक्त नियामक तंत्र और जागरूक उपभोक्ता-ये चार स्तंभ ही बीमा क्षेत्र को उसकी वास्तविक दिशा में ले जा सकते हैं। यदि समय रहते इन सुधारों को लागू नहीं किया गया, तो बीमा का यह महत्वपूर्ण साधन आम आदमी के लिए सुरक्षा के बजाय संकट का कारण बना रहेगा।

चिकित्सा और बीमा-दोनों ही ऐसे क्षेत्र हैं जो मूलतः मानव जीवन की सुरक्षा, राहत और सेवा से जुड़े हुए माने जाते हैं, लेकिन विडंबना यह है कि आज ये दोनों क्षेत्र आमजन के लिए सबसे अधिक जटिल, महंगे और अविश्वसनीय होते जा रहे हैं। एक ओर रियायती जमीन पर बने निजी अस्पताल गरीबों को मुफ्त इलाज देने के अपने दायित्व से बचते नजर आते हैं, वहीं दूसरी ओर स्वास्थ्य बीमा के नाम पर बीमा कंपनियां ऐसी शर्तें और प्रक्रियाएं थोप देती हैं कि जरूरत के समय मरीज को बीमा का लाभ मिलना कठिन हो जाता है। यह स्थिति केवल प्रशासनिक लापरवाही नहीं, बल्कि संवेदनहीन व्यवस्था का प्रतीक बनती जा रही है। सुप्रीम कोर्ट द्वारा दिल्ली के रियायती जमीन पर बने अस्पतालों को नोटिस जारी करना केवल एक प्रशासनिक कार्रवाई नहीं, बल्कि व्यवस्था को आईना दिखाने जैसा है। जब अस्पताल रियायती जमीन लेते समय गरीबों के इलाज का वायदा करते हैं, तो वह केवल कागजी औपचारिकता नहीं, बल्कि सामाजिक दायित्व होता है। लेकिन दुर्भाग्य यह है कि लाभ तो निजी अस्पताल उठा रहे हैं और दायित्व निभाने से बच रहे हैं। यही स्थिति बीमा क्षेत्र में भी दिखाई देती है, जहां पॉलिसी बेचते समय बड़े-बड़े वायदे किए जाते हैं, लेकिन क्लेम के समय छोटी-छोटी तकनीकी वजहों से दावे खारिज कर दिए जाते हैं।

आम आदमी सालों तक प्रीमियम भरता रहता है, लेकिन जरूरत के समय उसे राहत नहीं मिलती। इस स्थिति में सुप्रीम कोर्ट की सक्रियता एक सकारात्मक संकेत है। जिस प्रकार अदालत ने अस्पतालों से जवाब मांगा है, उसी प्रकार बीमा कंपनियों की कार्यप्रणाली पर भी सख्त निगरानी और स्पष्ट नियम बनने चाहिए, ताकि बीमा वास्तव में सुरक्षा का माध्यम बने, न कि मुनाफे का जाल। सरकारों की जिम्मेदारी केवल नीतियां बनाने तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि उनके क्रियान्वयन की सख्त निगरानी भी होनी चाहिए। यदि रियायती जमीन लेने वाले अस्पताल गरीबों का मुफ्त इलाज नहीं करते तो उनसे जमीन का बाजार मूल्य वसूला जाना चाहिए या उनकी मान्यता पर पुनर्विचार होना चाहिए। इसी तरह बीमा कंपनियों को भी क्लेम प्रक्रिया सरल, पारदर्शी और समयबद्ध बनानी चाहिए। स्वास्थ्य और बीमा दोनों ही आम आदमी की जीवन सुरक्षा से जुड़े विषय हैं, इसलिए इनमें मुनाफाखोरी की मानसिकता पर नियंत्रण आवश्यक है। यदि सरकार, न्यायपालिका और नियामक संस्थाएं मिलकर सख्ती और पारदर्शिता सुनिश्चित करें, तो चिकित्सा और बीमा दोनों क्षेत्रों में आमजन का विश्वास फिर से स्थापित हो सकता है। अन्यथा सेवा के ये क्षेत्र केवल व्यवसाय बनकर रह जाएंगे और गरीब आदमी इलाज और बीमा दोनों के बीच पिसता रहेगा।

(खक, पत्रकार, स्तंभकार)

संपादकीय

भारत में 'तेल आपातकाल' नहीं

प्रधानमंत्री मोदी ने राज्य के मुख्यमंत्रियों के साथ, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए संवाद और विमर्श किया। यह हमारे लोकतंत्र का संघीय चरित्र है। प्रधानमंत्री ने ईरान युद्ध से उपजे पश्चिम एशिया ही नहीं, बल्कि वैश्विक हालात पर चर्चा की होगी। ऐसे ही संघीय संवाद कोरोना महामारी के दौरान भी किए गए थे। तब एक खास किस्म का विषैला, जानलेवा संक्रमण दुनिया भर में फैला था। भारत में लॉकडाउन के साथ-साथ कई सख्त कदम भी उठाए गए थे। हमारी अर्थव्यवस्था नकारात्मक हो गई थी। बेहद भयावह माहौल और हालात थे। बहरहाल आज वैसे हालात नहीं हैं। तेल-गैस, उर्वरक आदि की आपूर्ति अवरुद्ध हुई है, लिहाजा किल्लत महसूस हो रही है। कुछ संकट का दौर तो है। अफवाहों और दुष्प्रचार की ह्यकाली भेड़ोंह्ण ने लॉकडाउन की फर्जी खबरें चलाना भी शुरू कर दिया है। मीडिया के एक वर्ग में यह विश्लेषण भी छापा गया कि देश में तेल-गैस का स्टॉक मात्र 7-9 दिन का है। शायद उसी से आम आदमी घबराया है और पेट्रोल पंपों पर जन-सैलाब की स्थितियां हैं। मारा-पीटी भी हुई है। पुलिस पर भी प्रहार किया गया है। पेट्रोलियम मंत्रालय ने हकीकत का खुलासा किया है कि देश में पेट्रोल-डीजल, रसोई गैस (एलपीजी) का 60 दिन का स्टॉक सुरक्षित है। अगले 60 दिन के कच्चे तेल की बुकिंग सरकार ने कर ली है। करीब 8 लाख टन एलपीजी कार्गो सुरक्षित कर लिए गए हैं। वे रूस, अमरीका, ऑस्ट्रेलिया आदि कई देशों से आ रहे हैं। सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, इराक, रूस आदि देशों से कच्चा तेल आ रहा है। यह आपूर्ति 60 दिन के लिए सुनिश्चित कर ली गई है। देश के एक लाख पेट्रोल पंपों में से एक पर भी पेट्रोल-डीजल खत्म नहीं हुए हैं। लगातार सप्लाई जारी है। देश में करीब 3.3 करोड़ मीट्रिक टन एलपीजी की सालाना खपत होती है और हमारी रिफाइनरियां हररोज औसतन 50,000 टन एलपीजी का उत्पादन कर रही हैं। उत्पादन 40 फीसदी बढ़ाया गया है। यदि जमाखोर, कालाबाजारी, मुनाफाखोर, चोर-लुटेरे, देश-विरोधी लोग सरकार के इस खुलासे से आश्वस्त नहीं हैं, तो देश में दूसरा कौनसा वैकल्पिक माध्यम है, जो तेल-गैस की अपडेट वस्तुस्थिति देश को बता सके? आप सरकार-विरोधी, प्रधानमंत्री-विरोधी, नीति-विरोधी हो सकते हैं, लेकिन राजनीतिक दुराग्रह भारत-विरोध की हद तक नहीं पहुंचना चाहिए।

चिंतन-मनन

मृत्यु का अर्थ

मृत्यु एक शात सत्य है। यह अनुभूति प्रत्यक्ष प्रमाणित है, फिर भी इसके संबंध में कोई दर्शन नहीं है। अब तक जितने ऋषि-महर्षि या संत-महंत हुए हैं, उन्होंने जीवन दर्शन की चर्चा की है। जीवन के बारे में ऐसी अनेक दृष्टियां उपलब्ध हैं जिनसे जीवन को सही रूप में समझा जा सकता है और जिया जा सकता है। किंतु मृत्युक को एक अवश्यंभावी घटना मात्र मानकर उपेक्षित कर दिया गया। मृत्यु के पीछ भी कोई दर्शन है, इस रहस्य को अधिक लोग पकड़ ही नहीं पाए। यही कारण है कि जीवन दर्शन की भांति मृत्यु दर्शन जीवन में उपयोगी नहीं बन सका।

जैन दर्शन एक ऐसा दर्शन है जिसने जीवन को जितना महत्व दिया, उतना ही महत्व मृत्यु को दिया। बशत्रे कि वह कलात्मक हो। कलात्मक जीवन जीने वाला व्यक्ति जीवन की सब विसंगतियों के मध्य जीता हुआ भी उसका सार तत्व खींच लेता है। इसी प्रकार मृत्यु की कला समझने वाला व्यक्ति भी मृत्यु से भयभीत न होकर उसे चुनौती देता है। जैन दर्शन में इसका सवार्गीण विवेचन उपलब्ध है।

मृत्यु का अर्थ है- आयुष्य प्राण चुक जाने पर जीव का स्थूल शरीर से वियोग।इसके कई प्रकार हैं। उन सबका संक्षिप्त वर्गीकरण किया जाए तो मृत्यु के दो प्रकार होते हैं- बाल मरण और पंडित मरण. असंयम और असमाधिमय मरण बाल मरण है। अकाल मृत्यु, आत्महत्या, अज्ञान मरण आदि सभी प्रकार के मरण बाल मरण में अंतर्निहित हैं। संयम और समाधिमय मृत्यु पंडित मरण है। जीवन के अंतिम क्षणों में भी संयम और समाधि का स्पर्श हो जाए तो वह मरण पंडित मरण की गणना में आ जाता है। कुछ व्यक्ति मौत के नाम से ही घबराते हैं।

वे जीवन को महत्व देते हैं। अपना-अपना चिंतन है। मुझे इस संबंध में अपने विचार देने हों तो मैं मृत्यु को वरीयता दूंगा। क्योंकि जीवन की सार्थकता भी मृत्यु पर ही निर्भर करती है। किसी व्यक्ति ने तपस्या की है और जागरुकता के साथ धर्म की आराधना की है, तो उसका फल समाधिमय मृत्यु ही है।

श्री हनुमान जन्मोत्सव पर निकली भव्य ध्वज यात्रा, डीजे-ढोल पार्टी रही आकर्षण का केंद्र, हुई 4 दिवसीय आयोजन की शुरुआत

नीमच । विश्व हिन्दू परिषद द्वारा संचालित श्री गोधाम बालाजी मंदिर पर हनुमान जन्मोत्सव इस वर्ष भी अत्यंत भव्यता और श्रद्धा के साथ मनाया जा रहा है। चार दिवसीय आयोजन की शुरुआत सोमवार 30 मार्च को भव्य ध्वज यात्रा के साथ हुई। इस यात्रा में बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए और पूरे शहर में भक्ति का माहौल देखने को मिला।ध्वज यात्रा शहर के प्रमुख मार्गों से होकर गुजरी और अंत में श्री गोधाम बालाजी मंदिर पहुंचकर संपन्न हुई। यात्रा के दौरान डीजे, ढोल और झांकियां विशेष आकर्षण का केंद्र रहीं। श्रद्धालु भगवान हनुमान के जयकारों के साथ झूमते नजर आए, जिससे वातावरण भक्तिमय हो गया। विश्व हिंदू परिषद जिला मंत्री कैलाश मालवीय ने बताया कि हर वर्ष की तरह इस बार भी हनुमान जन्मोत्सव के अवसर पर विभिन्न धार्मिक आयोजन किए जा रहे हैं। 31 मार्च को शाम 7:15 बजे मंदिर परिसर में भव्य भजन संध्या का आयोजन होगा, जिसमें प्रतापगढ़ के प्रसिद्ध भजन गायक नवीन वैष्णव अपने मधुर भजनों की प्रस्तुति देंगे। 1 अप्रैल को रात्रि 2:00 बजे से सुंदरकांड और हनुमान चालीसा पाठ प्रारंभ होगा। इसके बाद सुबह 9:15 बजे वैदिक मंत्रोच्चार के साथ भगवान बालाजी का अभिषेक किया जाएगा तथा दोपहर 12:15 बजे अष्टोत्तर श्रीराम रक्षा स्तोत्र यज्ञ का आयोजन होगा। 2 अप्रैल को प्रातः 6:00 बजे जन्म महाआरती के साथ कार्यक्रमों की शुरुआत होगी।

इसके पश्चात 7:00 बजे सप्तकुंडी यज्ञ और शाम 7:00 बजे महाआरती के बाद 71 किलो मिल्क केक और बूंदी के लड्डुओं का भोग अर्पित किया जाएगा। इस अवसर पर आकर्षक आतिशबाजी भी की जाएगी।

रात्रि 8:15 बजे से संगीतमय सुंदरकांड पाठ होगा।इस प्रकार चार दिवसीय हनुमान जन्मोत्सव कार्यक्रम शहर में श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया जा रहा है।

नगर पालिका में एल्डरमेन का जनप्रतिनिधियों ने किया स्वागत

नीमच 30 मार्च (निप्र)। शासन द्वारा प्रदेश की निकायों में एल्ड- रमैन (वरिष्ठ पार्षद) नियुक्ति के तहत नगर पालिका परिषद नीमच में 6 एल्डरमैन नियुक्त किए गए। सोमवार 30 मार्च को नगर पालिका कार्यालय स्थित नपाध्यक्ष कक्ष में नवनियुक्त एल्डरमैन शांतिलाल गुप्ता, शंकर बंसल, लता हरित, आकांक्षा तलरेजा, मनीष बेंस और हरभजन सिंह सलूजा का स्वागत किया गया। इस अवसर पर विधायक दिलीप सिंह परिहार, भाजपा जिला अध्यक्ष वंदना खंडेलवाल, नपा- ध्यक्ष स्वाति गौरव चोपड़ा और सीएमओ दुर्गा बामनिया सहित पार्षदों व पदाधिकारियों ने मुंह मीठा कराकर, गुलदस्ता व पुष्पमाला भेंट कर सम्मान किया। कार्यक्रम में भाजपा प्रदेश कार्य समिति सदस्य हेमंत हरित, महेंद्र भटनागर, मंडल अध्यक्ष मोहन सिंह राणावत और सभापति कुसुम अशोक जोशी सहित अन्य जनप्रतिनिधि मौजूद रहे। कार्यक्रम के दौरान विधायक परिहार ने जिला अध्यक्ष, नपाध्यक्ष और सीएमओ के साथ नगर पालिका कार्यालय की विभिन्न शाखाओं का दौरा किया। उन्होंने नवनियुक्त एल्डरमैन का कर्मचारियों से परिचय करवाया और विभागीय कार्यों की जानकारी भी ली ।

जलवा पूजन की परम्परा संग हनुमान जन्मोत्सवः बालाजी धाम में उमड़ेगी आस्थ

नीमच 30 मार्च (निप्र)।। बघाना स्थित प्राचीन बालाजी धाम मंदिर में इस वर्ष 80वां तीन दिवसीय श्री हनुमान जन्मोत्सव 31 मार्च से 2 अप्रैल 2026 तक भक्ति और श्रद्धा के साथ मनाया जाएगा। इस दौरान मंदिर परिसर में भव्य साज-सज्जा, आकर्षक झांकियां एवं बालाजी का मनमोहक श्रृंगार श्रद्धालुओं के आकर्षण का केंद्र रहेगा। आयोजन को लेकर मंदिर समिति द्वारा व्यापक तैयारियां की गई है ।

पहले दिन ध्वजारोहण व जागरण - 31 मार्च 2026, मंगलवार को प्रातः 10 बजे विद्वान पंडितों के मंत्रोच्चार के साथ ध्व- जारोहण किया जाएगा। रात्रि 10 बजे से भव्य जागरण का आयोजन होगा, जिसमें भजन--कीर्तन के माध्यम से श्रद्धालु भक्ति रस में सराबोर होंगे।

दूसरे दिन भजन-कीर्तन व जन्मोत्सव आयोजन - 1 अप्रैल 2026, बुधवार को दोपहर 3 बजे महिलाओं द्वारा भजन-कीर्तन एवं सुन्दर काण्ड पाठ किया जाएगा। रात्रि 8 बजे सांध्य- कालीन आरती होगी। इसके पश्चात रात्रि 8:30 बजे हनुमान जन्मोत्सव एवं जलवा उत्सव के चोले का ड्रा निकाला जाएगा। रात्रि 10 बजे से बालाजी संकीर्तन मंडल बघाना के तत्वावधान में जन्म जागरण का आयोजन होगा।

तीसरे दिन महाआरती, महायज्ञ व आतिशबाजी - 2 अप्रैल 2026, गुरुवार को प्रातः 6:23 बजे जन्मोत्सव महाआरती दोल, शंख, घड़ियाल, शहनाई एवं बैंड बाजों के साथ संपन्न होगी। प्रातः 9 बजे मनोकामना सिद्धि महायज्ञ आयोजित किया जाएगा। रात्रि 8 बजे से स- ध्याकालीन महाआरती एवं भव्य आतिशबाजी होगी।

विशाल भंडारे का आयोजन - उसी दिन 2 अप्रैल को प्रातः 11 बजे से दोपहर 3 बजे तक विशाल भंडारे का आयोजन किया जाएगा, जिसमें हजारों श्रद्धालुओं के प्रसादी ग्रहण करने की व्यवस्था रहेगी। 1946 से चली आ रही है परंपरा जलवा पूजन की यह परंपरा वर्ष 1946 में महंत पं. परमानंद जोशी द्वारा प्रारंभ की गई थी। उनके साथ बापू सिंह परिहार और प्रभाती लाल शर्मा ने इसे वर्षों तक निभाया। वर्तमान में मंदिर समिति इस परंपरा को निरंतर आगे बढ़ा रही है।

जलवा पूजन का महत्व - हिंदू धर्म के 16 संस्कारों में शामिल जलवा पूजन के दिन जलाशय और सूर्य की विशेष पूजा-अर्चना की जाती है। बालाजी धाम में इस अवसर पर माता अंजनी का विशेष पूजन होता है। मंदिर समिति ने क्षेत्र के समस्त श्रद्धालु- ओं से अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर धर्म लाभ लेने की अपील की है।

वास्तु दोष दूर करता है मोरपंख

मोर बेहद खूबसूरत पंछी है। ज्योतिष, वास्तु, धर्म, पुराण और संस्कृति में मोर का अत्यधिक महत्व माना गया है। मोर पंख घर में रखने से अमंगल टल जाता है। आइए जानें 25 अनूठी बातें मोर पंख के बारे में.

- मोर, मयूर, पिकॉक कितने खूबसूरत नाम है इस सुंदर से पक्षी के। जितना खूबसूरत यह दिखता है उतने ही खूबसूरत फायदे इसके पंखों के भी हैं। हमारे देवी -दवताओं को भी यह अत्यंत प्रिय हैं। मां सरस्वती, श्रीकृष्ण, मां लक्ष्मी, इन्द्र देव, कार्तिकेय, श्री गणेश सभी को मोर पंख किसी न किसी रूप में प्रिय हैं। पौराणिक काल में महर्षियों द्वारा इसी मोरपंख की कलम बनाकर बड़े-बड़े ग्रंथ लिखे गए हैं।
- मोर के विषय में माना जाता है कि यह पक्षी किसी भी स्थान को बुरी शक्तियों और प्रतिकूल चीजों के प्रभाव से बचाकर रखता है। यही वजह है कि अधिकांश लोग अपने घरों में मोर के खूबसूरत पंखों को लगाते हैं।
- मोर पंख की जितनी महत्ता भारत के लोगों के लिए है शायद ही किसी अन्य देश के लोगों के लिए हो। हमारे यहां माना जाता है कि मोर नकारात्मक ऊर्जा को दूर करने में सबसे प्रभावशाली है।
- हालांकि 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में पश्चिमी देशों के लोग मोरपंख को दुर्भाग्य का सूचक मानते थे। लेकिन मोर पंख की शुभता का अनुभव होने के बाद उसे शुभ चिन्ह के रूप में स्वीकार कर लिया गया।
- ग्रीक पौराणिक कथाओं के अनुसार मोर को 'हेरा' के साथ संबंधित किया जाता है। मान्यता के अनुसार आर्गस, जिसकी सौ आंखें थीं, उसके द्वारा हेरा ने मोर की रचना की।
- यही वजह है कि ग्रीक लोग मोर के पंखों को स्वर्ग और सितारों की निगाहों के साथ जोड़ते हैं।
- हिंदू धर्म में मोर को धन की देवी लक्ष्मी और विद्या की देवी सरस्वती के साथ जोड़कर देखा जाता है।
- लक्ष्मी सौभाग्य, खुशहाली और धन धान्य व संपन्नता के लिए पूजी जाती हैं। मोर के पंखों का प्रयोग लक्ष्मी की इन्हीं विशेषताओं को हासिल करने के लिए किया जाता है। मोर पंख को बांसुरी के साथ घर में रखने से रिश्तों में प्रेम रस घुल जाता है।
- एशिया के बहुत से देशों में मोर के पंखों को अध्यात्म के साथ संबंधित किया जाता है। क्वान-यिन जो कि अध्यात्म का प्रतीक है का मोर से खास रिश्ता माना गया है। क्वान यिन : क्वान-यिन प्रेम, प्रतिष्ठा, धीरज और स्नेह का सूचक है। इसलिए संबंधित देशों के लोगों के अनुसार मोर पंख से नजदीकी अर्थात क्वान-यिन से समीपता मानी गई है।
- अगर आपके वैवाहिक जीवन में तनाव है तो अपने शयनकक्ष में मोरपंख रखें, इससे पति पत्नी के बीच प्यार बढ़ता है।
- यदि शत्रुता समाप्त करनी हो या कि शत्रु तंग कर रहे हो, तो मोरपंख पर हनुमान जी के मस्तक के सिंदूर से उस शत्रु का नाम मंगलवार या शनिवार रात्रि में लिखकर उसे घर के पूजा स्थल में रखें व सुबह उठकर उसे चलते पानी मे प्रवाहित कर आएं।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार मोरपंख को घर की दक्षिण दिशा में स्थित तिजोरी में खड़ा करके रखने से कभी भी धन की कमी नहीं होती है।
- राहु का दोष होने पर मोरपंख घर की पूर्वी और उत्तर पश्चिम की दीवार पर लगाएं।
- अगर आपके घर में मोरपंख है तो आपके घर में कोई भी बुरी शक्ति प्रवेश नहीं कर पाती है। यह घर से नकारात्मक ऊर्जा को दूर करके सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ावा देता है।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार मोरपंख को घर में रखने से आपके घर के सारे दोष दूर हो जाते है।
- यदि मोर का पंख घर के पूर्वी और उत्तर-पश्चिम दीवार मे या अपनी जेब व डायरी मे रखा हो तो राहू कभी भी परेशान नहीं करता है। मोरपंख की पूजा करे या हो सके तो उसे हमेशा अपने पास रखे। मोरपंख को घर में रखने से परिवार के सदस्यों की सेहत भी अच्छी रहती है।
- ग्रहों के अशुभ प्रभाव होने पर मोरपंख पर 21 बार ग्रह का मंत्र बोलकर पानी का छींटें दें, और इसे श्रेष्ठ स्थान पर स्थापित करें जहां से यह दिखाई दे।
- आर्थिक लाभ के लिए किसी मंदिर में जाकर मोरपंख को राधा कृष्ण के मुकुट में लगाएं और 40 दिन बाद इसे लॉकर या तिजोरी में रख दें।
- बुरी नजर से बच्चों को बचाने के लिए नवजात बालक को मोरपंख चांदी के ताबीज में पहनाएं।
- घर के मुख्य द्वार पर 3 मोरपंख लगाकर ऊँ द्वारपालाय नमः जाग्रय स्थापयै स्वाहा मंत्र लिखें और नीचे गणेश जी की मूर्ति लगाएं।
- आग्नेय कोण में मोरपंख लगाने से घर के वास्तु दोष को ठीक किया जा सकता है। इसके अलावा ईशान कोण में कृष्ण भगवान की फोटो के साथ मोरपंख लगाएं।
- बौद्ध धर्म के अनुसार मोर अपनी अपने सारे पंखों को खोल देता है, इसलिए उसके पंख विचारों और मान्यताओं में खुलेपन का ही प्रतीक माने जाते हैं।
- ईसाई धर्म में मोर के पंख, अमरता, पुनर्जीवन और अध्यात्मिक शिक्षा से संबंध रखते हैं।
- इस्लाम धर्म में मोर के खूबसूरत पंख जन्नत के दरवाजे के बाहर अद्भुत शाही बगीचे का प्रतीक माने जाते हैं।
- यह भी विशेष गौर करने लायक तथ्य है कि घरों में मोरपंख रखने से कीड़े-मकोड़े घर में दाखिल नहीं होते।

सुंदर कांड देता है मन को शांति, बढ़ाता है शुभ ऊर्जा

महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण पर आधारित महाकाव्य श्रीरामचरितमानस का पंचम सोपान है सुंदर कांड। इसमें रामदूत, पवनपुत्र हनुमान का यशोगान किया गया है, इसलिए सुंदर कांड के नायक श्री हनुमान को माना जाता हैं।

सुंदर कांड का पाठ मन को शांति देने तथा शुभ **ऊर्जा बढ़ाने का काम करता है।** सुंदर कांड का नाम सुंदर कांड क्यों रखा गया...
दरअसल, जब हनुमान जी, सीता जी की खोज में लंका गए थे और लंका त्रिकुटांचल पर्वत पर बसी हुई थी। त्रिकुटांचल पर्वत यानी यहां 3 पर्वत थे। पहला सुबैल पर्वत, जहां के मैदान में युद्ध हुआ था। दूसरा नील पर्वत, जहां राक्षसों के महल बसे हुए थे। तीसरे पर्वत का नाम है सुंदर पर्वत, जहां अशोक वाटिका निर्मित थी। इसी **वाटिका में हनुमान जी और सीता जी** की भेंट हुई थी। सुंदर पर्वत पर ही सबसे प्रमुख घटना घटित होने के कारण इसका नाम सुंदर कांड रखा गया। सुंदर पर्वत पर ही अशोक वाटिका थी और इसी अशोक वाटिका में ही हनुमान और सीता जी का मिलन हुआ था इसीलिए इस कांड का नाम सुंदर कांड रखा गया। कहा जाता हैं कि यहां की घटनाओं में हनुमान जी ने एक विशेष शैली अपनाई थी।
वास्तव में श्रीरामचरितमानस के सुंदर कांड की **कथा सबसे अलग है।** संपूर्ण श्रीरामचरितमानस **भगवान श्रीराम के गुणों** और उनके पुरुषार्थ को **दर्शाती है। सुंदर कांड** एकमात्र ऐसा अध्याय है, **जो श्रीराम के भक्त हनुमान** की विजय का कांड **है। धार्मिक शास्त्रों के** अनुसार सुंदर कांड का पाठ हम सभी को सुनना और पढ़ना चाहिए क्योंकि यह पाठ सभी मनोकामनाओं को पूर्ण **करने वाला तथा किसी** भी प्रकार की परेशानी **या संकट से आप घिरे** हुए हो तो सुंदर कांड **पाठ पढ़ने या सुनने से** यह संकट तुरंत दूर हो **जाता है। इतना ही नहीं** यह प्रभु श्रीराम के **परमभक्त श्री बजरंग बली** की विजय का कांड **होने से हम** पर प्रभु श्रीराम, माता सीता तथा हनुमान जी की अनन्य कृपा प्राप्त होती है तथा हमारे मन को शांति मिलती है।
हनुमान जी जल्द ही प्रसन्न होने वाले देवता माने **जाते हैं, अत-** प्रतिदिन सुंदर कांड का पाठ करने **वाले मनुष्य** के जीवन से नकारात्मक शक्तियां **भाग जाती है** तथा यह पाठ बल, बुद्धि, एकाग्रता, **आत्मविश्वास** बढ़ता है तथा जीवन में **सकारात्मक** बदलाव देखने को मिलते हैं और **हमारे अंदर** सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता **है।इसके** अलावा भी सुंदर कांड पाठ पढ़ने के **बहुत सारे** लाभ हैं। विद्यार्थियों को यह पाठ **अवश्य करना** चाहिए, क्योंकि इसका विशेष **लाभ मिलता** है। यह आत्मविश्वास बढ़ाकर **एक्जाम में** अच्छे अंक दिलाने में मददगार है। यह मानसिक परेशानियां, व्याधियां, गृह क्लेश, ऋण/ कर्ज मुक्ति आदि कई समस्या में भी लाभदायी है।

श्री कोत्तानकुलांगरा देवी मंदिर जहां पुरुषों को करना पड़ता है महिलाओं की तरह सोलह श्रृंगार

धर्म को लेकर हमारे देश में जहां तरह-तरह के प्रतबिंध लगाए गए हैं। देश में बहुत से मंदिर ऐसे हैं जिनमें महिलाओं का प्रवेश करने पर रोक होती है। ये मंदिर देश भर में इस तरह के लिए जाना जाता है कि यहां प्रवेश करने और पूजा करने के इच्छुक पुरुषों को बकायदा महिलाओं की ड्रेस में आना पड़ता है। इस मंदिर में उन्हें पूजा करने के लिए महिलाओं, किन्नरों पर कोई रोक नहीं है, लेकिन पुरुष अगर इस मंदिर में पूजा अर्चना करना चाहता है तो उसे महिलाओं की तरह पूरा सोलह श्रृंगार करना पड़ता है। यह खास मंदिर केरल के कोल्लम जिले में हैं जहां पर **श्री कोत्तानकुलांगरा देवी मंदिर में** हर साल चाम्याविलक्कू त्यौहार मनाया जाता है। इस त्योहार में हर साल हजारों की संख्या में पुरुष श्रद्धालु आते हैं। उनके तैयार होने के लिए मंदिर में अलग से मेकअप रूम बनाया जाता है। पुरुष महिलाओं की तरह न केवल साड़ी पहनते है, बल्कि जूलरी, मेकअप और बालों में गजरा भी लगाते है। इस उत्सव में शामिल होने के लिए उम्र की कोई सीमा नहीं है। यही नहीं ट्रांसजेंडर भी इस मंदिर में पूजा अर्चना करने के लिए आते हैं। ऐसा माना जाता है कि इस मंदिर में देवी की मूर्ति स्वयं प्रकट हुई थी। अपनी खास परंपरा के लिए दुनियाभर में मशहूर इस मंदिर के ऊपर कोई छत नहीं हैं। इस राज्य का यह ऐसा एकमात्र मंदिर है जिसके गर्भगृह के ऊपर छत या कलश नहीं हैं। ऐसी मान्यता है कि कुछ चरवाहों ने महिलाओं के कपड़े पहनकर पत्थर पर फूल चढ़ाए थे, जिसके बाद उस पत्थर से दिव्य शक्ति निकलने लगी। इसके बाद इसे मंदिर का रूप दिया गया। एक मान्यता यह भी है कि कुछ लोग पत्थर पर नारियल फोड़ रहे थे और इसी दौरान पत्थर से खून निकलने लग गया जिसके बाद से यहां देवी की पूजा होने लगी।

इन 6 जगहों पर भूलकर भी न पहनकर जाएं रुद्राक्ष

रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के अश्रुओं से हुई है। उन्होंने कठोर तप के बाद जब आंखें खोली तो उनके आंखों से जो आंसू भूमि पर गिरे उसे से रुद्राक्ष की उत्पत्ति हुई। रुद्राक्ष को पहने के नियम भी है।

रुद्राक्ष का अर्थ है रुद्र का अक्ष। यानी भगवान रुद्र की आंखें। माना जाता है कि रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के अश्रुओं से हुई है। उन्होंने कठोर तप के बाद जब आंखें खोली तो उनके आंखों से जो आंसू भूमि पर गिरे उसे से रुद्राक्ष की उत्पत्ति हुई। रुद्राक्ष को पहने के नियम भी है। कहते हैं कि 6 जगहों पर रुद्राक्ष पहकर गए तो शिवजी नाराज हो जाएंगे।

- **श्मशान** - रुद्राक्ष की माला या रुद्राक्ष को किसी भी रूप में धारण करके शमशान नहीं जाना चाहिए। जो शमशान के संत होते हैं वे रुद्राक्ष के नियमों का पालन करते हैं।
- **मृत्यु वाले घर** - जहां पर किसी की मृत्यु हो गई हो वहां पर भी रुद्राक्ष पननकर न जाएं। यदि आपके घर में किसी परिजन की मृत्यु हो गई है तो रुद्राक्ष को उतारकर किसी उचित स्थान पर रख दें।
- **शौचालय या स्नानघर** - टॉयलेट या बाथरूम में रुद्राक्ष पहनकर नहीं जाते हैं। ऐसा करने से घोर पाप लगता है। यह शिवजी का अपमान माना जाएगा।
- **मांस मदिरा सेवन के समय** - रुद्राक्ष पहकर कर मांस भक्षण करना या शराब पीना वर्जित है। इसी के साथ ही बूचड़खाने में जाना या किसी शराब की दुकान पर जाना भी वर्जित है। जहां पर मुर्गा, बकरा आदि कटना या बनता है उस स्थान से भी दूर रहें।
- **बालक के जन्म पर** - जहां पर किसी बच्चे का जन्म हुआ हो और प्रसूता रहती हो वहां पर रुद्राक्ष पहनकर जाना वर्जित है। एक माह तक नियम का पानल करना चाहिए। ऐसी जगह पहनकर जाने से रुद्राक्ष निस्तेज हो जाता है।
- **शयन कक्ष** - सोने से पहले रुद्राक्ष को उतारकर उचित स्थान पर रख देना चाहिए। सोने के दौरान जहां रुद्राक्ष के टूटने का अंदेशा रहता है वहीं इससे रुद्राक्ष अशुद्ध और निस्तेज हो जाता है।

चन्द्र घात के समय नहीं करना चाहिए कोई महत्वपूर्ण कार्य

चंद्र घात विचार वैसे तो बहुत विस्तृत विषय है परंतु यहां पर आप संक्षिप्त में जान लें। पहले के समय में जन्म पत्रिका या कुंडली बनाते समय में घात चक्र का विवरण या सारणी भी दी जाती थी, परंतु आजकल नहीं दी जाती है। हालांकि इसको अब कोई महत्व भी नहीं देता है।

- किस राशि के लिए कौन नक्षत्र, मास, तिथि, वार, प्रहर चन्द्र आपके लिए शुभ है या अशुभ है यह जानना ही चंद्र घात के अंतर्गत आता है।
- किसी राशि विशेष के लिए एक ही दिन तीन से ज्यादा घात मिले तो उस दिन सावधानी बरतनी चाहिए।
- इन सब प्राचीन घात सूत्रों को ध्यान में रखने से घटना को कुछ हद तक टाला जा सकता है या उस घटना की भयावता को कम किया जा सकता है।
- सिंह राशि के लिए तृतीया तिथि एवं उस दिन शनिवार विशेष घातक माना गया है।
- जीवन में जन्म से तृतीय, पंचम, सप्तम दशाएं कष्टकारक होती है। उसे ध्यान में रखकर ही कोई कार्य करें।
- मेष की पहली, वृष की पांचवीं, मिथुन की नौवीं, कर्क की दूसरी, सिंह की छठी, कन्या की दसवीं, तुला की तीसरी, वृश्चिक की सातवीं, धनु की चौथी, मकर की आठवीं, कुम्भ की ग्यारहवीं, मीन की बारहवीं घड़ी घात चन्द्र मानी जाती है।
- कहते हैं कि चंद्र घात में यात्रा करने पर, युद्ध में जाने पर, कोर्ट कचहरी में जाने पर, खेती कार्य आरंभ करने पर, व्यापार शुरू करने पर, घर की नींव लगाने पर घात चन्द्र वर्जित मानी गई है।
- घात चन्द्र में रोग होने पर मौत, कोर्ट में केस दायर करने पर हार और यात्रा करने पर सजा या झूठा आरोप और विवाह करने पर वैधव्य होने की शंका व्यक्त की जाती है।
- मेषादि द्वादश राशियों के लिए क्रमशः 1, 5, 9, 2, 6, 10, 3, 7, 4, 8, 11, 12 घात चन्द्र दोष होता है। जैसे मेष राशि वालों के लिए मेष का, वृषभ राशि वालों के लिए वृषभ से पंचम कन्या का शेष इसी प्रकार घात चन्द्रमा होता है।
- मेषादि राशियों के लिए क्रमशः कृत्तिका, चित्रा, शतभीषा, मघा, धनिष्ठा, आर्दा, मूल, रोहिणी, पूर्वाभाद्रपदा, मघा, मूल और पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्रों के क्रमशः 1-2-3-3-1-3-2-4-3-4-4 और 4 चरण नक्षत्र घात चरण होते हैं। राज सेवा, युद्ध और विवाद में घात चन्द्रमा वर्जित है।

हरसिंगार का घर के आसपास होने बहुत ही शुभ माना गया है

हरसिंगार के फूल बहुत ही सुंदर और सुगंधित होते हैं। यह घर आंगन की सुंदरता में चार चांद लगा देता है। इसका घर के आसपास होने बहुत ही शुभ माना गया है। बहुत ही आसानी से आप इसे किसी भी नर्सरी से खरीदकर अपने घर आंगन में लगाएं और जीवन में सुख, शांति और समृद्धि को निमंत्रण दें। आओ जानते हैं कि इसे घर आंगन में लगाने से क्या होगा।

- हरसिंगार का वृक्ष जिसके भी घर के आसपास होता है उसके घर के सभी तरह के वास्तुदोष दूर हो जाते हैं।
- हरसिंगार के फूलों को खासतौर पर लक्ष्मी पूजन के लिए इस्तेमाल किया जाता है लेकिन केवल उन्हीं फूलों को इस्तेमाल किया जाता है, जो अपने आप पेड़ से टूटकर नीचे गिर जाते हैं। जहां यह वृक्ष होता है वहां पर साक्षात लक्ष्मी का वास होता है।
- हरसिंगार के फूलों की सुगंध आपके जीवन से तनाव हटाकर खुशियां ही खुशियां भर सकने की ताकत रखते हैं। इसकी सुगंध आपके मस्तिष्क को शांत कर देती है। घर परिवार में खुशी का माहौल बना रहता है और व्यक्ति लंबी आयु प्राप्त करता है।
- हरसिंगार के ये अद्भुत फूल सिर्फ रात में ही खिलते हैं और सुबह होते-होते वे सब मुरझा जाते हैं। यह फूल जिसके भी घर-आंगन में खिलते हैं, वहां हमेशा शांति और समृद्धि का निवास होता है।
- हृदय रोगों के लिए हरसिंगार का प्रयोग बेहद लाभकारी है। इस के 15 से 20 फूलों या इसके रस का सेवन करना हृदय रोग से बचाने का असरकारक उपाय है, लेकिन यह उपाय किसी आयुर्वेदिक डॉक्टर की सलाह पर ही किया जा सकता है। इसके फूल, पत्ते और छाल का उपयोग औषधि के रूप में किया जाता है।
- हरसिंगार के फूल जिसके भी घर-आंगन में खिलते हैं, वहां हमेशा शांति और समृद्धि का निवास होता है। इसके फूल तनाव हटाकर खुशियां ही खुशियां भरने की क्षमता रखते हैं।

Email: nmh.pawan@gmail.com
Contact: 9407423966, 70664886

महावीर जयंती पर शहर में निकली शोभायात्रा जैन संतों ने 'जियो और जीने दो' का संदेश दिया

नीमच । शहर में सकल जैन समाज ने भगवान महावीर स्वामी का जन्म कल्याणक महोत्सव उत्साहपूर्वक मनाया। महावीर जयंती के अवसर पर पुस्तक बाजार स्थित भीडभंजन पार्श्वनाथ ट्रस्ट मंदिर से एक शोभायात्रा निकाली गई। बैंड-बाजे की धुनो और भजनों के बीच भगवान महावीर स्वामी रजत रथ में विराजित होकर नगर भ्रमण पर निकले। शोभायात्रा में महिलाएं हाथों में धर्म ध्वजा लिए मंगल गान कर रही थीं, जबकि समाजजन जयकारे लगाते हुए चल रहे थे। यह यात्रा शहर के मुख्य मार्गों से होते हुए मिडिल स्कूल ग्राउंड पहुंची, जहां जैन संतों ने प्रवचन दिए। संतों ने 'जियो और जीने दो' के सिद्धांत पर चलने का संदेश दिया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु मौजूद रहे और जगह-जगह शोभायात्रा का स्वागत किया गया। सकल जैन समाज के मनीष कोठारी ने बताया कि महावीर जयंती पर एक चल समारोह निकाला गया। शोभायात्रा भीडभंजन पार्श्वनाथ मंदिर से शुरू होकर कमल चौक, बारादरी, घंटाघर होते हुए मिडिल स्कूल ग्राउंड पहुंची, जहां यह धर्म सभा में परिवर्तित हो गई। महावीर जयंती के उपलक्ष्य में तीन दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें सांस्कृतिक कार्यक्रम और प्रवचन शामिल थे।

माहेश्वरी युवा संगठन नीमच के चुनाव

काबरा अध्यक्ष, माहेश्वरी सचिव, खटोड़ कोषाध्यक्ष

नीमच, निप्र। माहेश्वरी युवा संगठन के सत्र 2026-28 के लिए चुनाव 29 मार्च रविवार को माहेश्वरी भवन मे युवा संगठन के सदस्यों एवं चुनाव अधिकारी नवीन गट्टानी, समाज अध्यक्ष सत्यनारायण जागेटीया, सचिव सुरेश सोडानी की उपस्थिति में हुए। सर्वसहमति से पीयूष काबरा को आगामी सत्र 2026.28 के लिए अध्यक्ष, शुभम माहेश्वरी को सचिव एवं हर्षित खटोड को कोषाध्यक्ष चुना गया। निर्वाचन कार्यक्रम में मनीष नवाल, मितेश गट्टानी, अजय झंवर, महेश समदानी, दीपक नवलखा, हर्षित अजमेरा, प्रद्युम्न बाल्दी आदि अन्य सदस्य मौजूद थे। उपरोक्त जानकारी संरक्षक मनोज माहेश्वरी द्वारा दी गई।

जावद में मौसम बदला, बारिश-ओले गिरे 2 अप्रैल तक पानी गिरने की संभावना

नीमच । जावद और आसपास के इलाकों में सोमवार को मौसम बदल गया। दोपहर में आंधी के साथ झमाझम बारिश हुई और कुछ जगहों पर ओले भी गिरे। इस बदलाव से पारे में 4 डिग्री सेल्सियस की गिरावट आई, जिससे तापमान 35 से घटकर 31 डिग्री पर पहुंच गया। जहां लोगों को गर्मी से राहत मिली, वहीं किसानों की चिंता बढ़ गई। सुबह से ही आसमान में बादलों का डेरा था। दोपहर 2 बजे से शुरू हुआ बारिश का दौर रुक-रुक कर शाम तक जारी रहा, जिससे सड़कों पर पानी भर गया। मौसम विभाग ने पहले ही 'येलो अलर्ट' जारी कर बारिश की संभावना जताई थी। वैज्ञानिकों के अनुसार, पश्चिमी विक्षोभ और साइक्लोनिक सर्कुलेशन के सक्रिय होने की वजह से यह बदलाव आया है।

किसानों पर आफत - यह बेमौसम बारिश खेती के लिए नुकसानदेह साबित हो रही है। इस समय रबी की फसलों की कटाई और गहाई का काम चल रहा है। खेतों में कटी रखी गेहूं और मेथी की फसलें भीग गई हैं, जिससे उनकी गुणवत्ता खराब होने का डर है। किसान अपनी साल भर की मेहनत को बचाने की जद्दोजहद में जुटे हैं।

आगे कैसा रहेगा मौसम ? - मौसम विभाग के मुताबिक, अरब सागर और बंगाल की खाड़ी से आ रही नमी के कारण अगले 24 घंटों तक बादल छाए रह सकते हैं। अनुमान है कि 2 अप्रैल तक प्रदेश के कई हिस्सों में मौसम का यह उतार-चढ़ाव जारी रहेगा, जिससे हल्की बारिश और गरज-चमक की स्थिति बनी रह सकती है।

MPPSC राज्य सेवा परीक्षा में 155 पदों पर 1.35 लाख अभ्यर्थी, 26 अप्रैल को होगी परीक्षा

इंदौर। राज्य सेवा परीक्षा में कम पद होने से अभ्यर्थियों की चिंता लगातार बढ़ती जा रही है। इस बार परीक्षा में केवल 155 पद घोषित किए गए हैं, जबकि इसके लिए लगभग एक लाख 35 हजार उम्मीदवारों ने आवेदन किया है। इतने कम पदों के कारण प्रतियोगिता बेहद कठिन हो गई है, जिससे अभ्यर्थियों में असंतोष साफ दिखाई दे रहा है। फिलहाल शासन की तरफ से कोई दिशा-निर्देश मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (एमपीपीएससी) को नहीं मिले हैं। इसके चलते आयोग ने अभी तक विभागों में पदों की संख्या पर फैसला नहीं किया है। हालांकि आयोग इस संबंध में लगातार शासन से संपर्क किए हुए है।

21 विभागों के लिए बनाए गए 500 से अधिक केंद्र - 26 अप्रैल को आयोग ने राज्य सेवा और वन सेवा परीक्षा रखी है, जिसमें सम्मिलित होने वाले अभ्यर्थियों को 16 अप्रैल से प्रवेश पत्र दिए जाएंगे। आयोग के मुताबिक राज्य सेवा परीक्षा में 21 विभागों में 155 पद रखे गए हैं। इनमें एसडीएम, डीएसपी, वाणिज्य कर अधिकारी, मुख्य नगर पालिका निगम अधिकारी, अतिरिक्त सहायक विकास अधिकारी, जिला पंजीयक, सहायक संचालक जनसंपर्क सहित अन्य पद हैं। आयोग ने प्रत्येक जिले में परीक्षा केंद्र रखे हैं, जिसमें 500 से ज्यादा शैक्षणिक संस्थानों को केंद्र बनाया है।

आज से बदलेगा 'कचरे' का खेल

नई दिल्ली । अप्रैल 2026 से देश के शहरों में कचरा प्रबंधन का तरीका पूरी तरह बदलने जा रहा है। अब तक सिर्फ नगर निगम की जिम्मेदारी माना जाने वाला कचरा अब बड़े अपार्टमेंट्स, होटलों और बड़े संस्थानों की खुद अपनी जिम्मेदारी होगा। सुप्रीम कोर्ट के हालिया आदेश के बाद यह साफ हो गया है कि आने वाले समय में कचरे को फेंकने नहीं बल्कि उसे संभालने का सिस्टम लागू होगा। उल्लंघन पर भारी जुर्माना और कानूनी कार्रवाई का प्रावधान भी है । अब तक शहरों में कचरा घर के बाहर रख देना ही जिम्मेदारी खत्म करने जैसा मान लिया जाता है। लेकिन केंद्र सरकार के वेस्ट मैनेजमेंट के नये नियमों और सुप्रीम कोर्ट के एक आदेश के बाद 1 अप्रैल से आपको अपनी ये आदत और सोच दोनों बदलनी होगी। आज हम यहां बात कर रहे हैं सुप्रीम कोर्ट के हालिया आदेश की। जिसके बाद अब भारी मात्रा में कचरा पैदा करने वाली संस्थाओं यानी BWG को खुद ही उसे अलग करना होगा। प्रोसेस करना होगा और उसका पूरा हिसाब-किताब यानी रिकॉर्ड भी रखना होगा।

स्वत्वाधिकारी, सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक ऐश्वर्य शर्मा के लिए माँ भगवती प्रिन्टर्स बंगला नं. 23, आईडीबीआई बैंक के सामने, नीमच, जिला-नीमच, मध्यप्रदेश से मुदित एवं प्रकाशित। सम्पर्क: 9407423966। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र नीमच होगा।